Laxmi Anusthan For Wealth

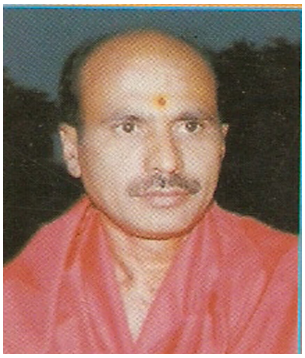

Shri Yogeshwaranand Ji
+919917325788, +919675778193
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु विशिष्ट अनुष्ठान

इस भौतिक जगत् में प्रत्येक कार्य के लिए धन की आवश्यकता होती है। यदि आप एक अगरबत्ती भी भगवान के समक्ष जलाना चाहते हैं तो उसके बाजार से क्रय करने के लिए धन चाहिए। आपको कोई पूजा-पाठ कराना है तो उसके लिए धन चाहिए। इसलिए इस संसार का प्रत्येक प्राणी धन की कामना करता है। जिस व्यक्ति पर मां लक्ष्मी की कृपा है, वह मूर्ख होते हुए भी विद्वान माना जाता है, लेकिन गरीब व्यक्ति चाहे कितना भी विद्वान और चतुर हो वह निष्क्रिय और मूर्ख समझा जाता है। इस भौतिक संसार में यदि मान सम्मान के साथ रहना है, तो धन सर्वाधिक आवश्यक है।

वैदिक साधनाओं में धन-प्राप्ति अथवा लक्ष्मी जी की कृपा प्राप्ति के लिए 'श्रीसूक्त' को बहुत अधिक

प्राथमिकता प्रदान की गयी है। 'कनकधारा-स्तोत्र' भी धनप्राप्ति के लिए अत्यधिक प्रमाणित माना जाता है। इसी कारण मैं यंहा एक ऐसा प्रयोग लिख रहा हूँ, जिसमें 'श्री दुर्गा सप्तसती, श्री सूक्त एवं लक्ष्मी मंत्र का सम्पुट है। जो लोग विपत्तियों में फंसे हुए हैं, धनाभाव के कारण सामर्थ्य हीन हो गये हैं, उनके लिए यह प्रयोग अत्यधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है। अन्त में बस मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि पाठ के करने से रोग, दरिद्रता, पाप, अकाल मृत्यु, भय, शोक, मानसिक कष्ट और क्लेशों का नाश होता है।

पूर्णतः शुचित होकर आसन पर बैठकर परमेश्वरी का ध्यान करें-

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्राय नियताः प्रणताः स्मताम्।।

इसके बाद लक्ष्मी जी का आवाहन करें-

आवाहन करने के उपरान्त उन्हें आसन प्रदान करें-

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण सजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

इसके उपरान्त उन्हें आसन प्रदान करें-

ओम तां म-आवह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गमाश्वं पुरूषानहम्।।

उनके पाद्य प्रक्षालन करें-

ओम् अश्व पूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद् प्रबोधिनीम ।
श्रियं देवी -मुपहव्ये श्रीं रमा देवी जुषताम्।।

अब उन्हें अर्घ्य प्रदान करें-

ओम् कां सोस्मितां हिरण्य प्रकारा माद्रां ज्वलन्तीं तृप्तातर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्म वर्णां तामिहो पह्व्ये श्रियम्।।

अब उन्हें आचमन करायें-

चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टा मुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।

आचमन के उपरान्त उन्हें स्नान करायें-

आदित्यवर्णे तपसो-अधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षो-अथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्य अलक्ष्मीः।।

स्नान के उपरान्त भगवती को वस्त्र भेट करें-

ओम् उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो राष्ट्रे-अस्मिन् कीर्ति ऋद्धिं ददातु मे।।

वस्त्रों के उपरान्त उपवस्त्र प्रदान करें-

ओम् क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम् लक्ष्मी नाशयाम्यहम्।

अभूतिम समृद्धिंच सर्वान्निर्णुद मे गृहात्।।

इसके उपरान्त उन्हें गंध प्रदान करें-

ओम् गंधद्वारा दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामि होपह्वये श्रियम्।।

इसके बाद चावल, सिंदूर, अबीर, गुलाल प्रदान करें-

ओम् मनसः काममाकूतिं वाचः सत्य मशीमहि।
पशूनां रूप मन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

अब उन्हें पुष्प अर्पित करें-

ओम् कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम्।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म मालिनीम्।।

धूप दें-

ओम् आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
निच देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।

दीपक दिखायें-

आर्द्रा पुष्पकरिर्णीं पुष्टि सुवर्णा हेम मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मर्यीं लक्ष्मीं जातवेदो मे आवह।।

नैवेद्य अर्पित करें-

ओम् आर्द्रां यः करिर्णीं यष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमर्यीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।

इसके बाद मां को दक्षिणा, आरती व पुष्पांजलि अर्पित करें-

ओम् तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्याश्वान् विन्देय पुरूषानहम्।।

अब उन्हें नमस्कार करें-

यः शुचि प्रयतो भूत्वा जुहुदाज्य मन्वहम्।
सूक्तं पंच दशर्चं च श्रीः कामः सततं जपेत्।।

इसके उपरान्त हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

यस्य स्मृत्या च नामावत्य तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

इस प्रकार पूजन करने के उपरान्त तीन बार कहें-

ओम् विष्णवे नमः।
ओम् विष्णवे नमः।
ओम् विष्णवे नमः।

इसके उपरान्त निम्नांकित संपुटित पाठ करें -

बीज मंत्रः- ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्री ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

सम्पुट मंत्रः-

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।

दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण सजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।

ओम तां म-आवह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गमाश्वं पुरूषानहम्।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
ओम् अश्व पूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद् प्रबोधिनीम ।
श्रियं देवी -मुपहव्ये श्री रमा देवी जुषताम्।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।

स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
ओम् कां सोस्मितां हिरण्य प्रकारा माद्रां ज्वलन्तीं तृप्तातर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्म वर्णां तामिहो पह्व्ये श्रियम्।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टा मुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
आदित्यवर्णे तपसो-अधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षो-अथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्य अलक्ष्मीः।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
ओम् उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह।

प्रादुर्भूतो राष्ट्रे-अस्मिन् कीर्तिं ऋद्धिं ददातु मे।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
ओम् क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम् लक्ष्मी नाशयाम्यहम्।
अभूतिम समृद्धिंच सर्वान्निर्णुद मे गृहात्।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।

ओम् गंधद्वारा दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामि होपह्वये श्रियम्।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
ओम् मनसः काममाकूतिं वाचः सत्य मशीमहि।
पशूनां रूप मन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।

स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
ओम् कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम्।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म मालिनीम्।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
ओम् आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
निच देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
ओम् आर्द्रां पुष्पकरिणीं पुष्टि सुवर्णा हेम मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मे आवह।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।

ओम् आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
ओम् तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्याश्वान् विन्देय पुरूषानहम्।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।।
ओम् यः शुचि प्रयतो भूत्वा जुहुदाज्य मन्वहम्।
सूक्तं पंच दशर्चं च श्रीः कामः सततं जपेत्।।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

नोटः- उपर्युक्त पाठ को करते हुए श्रीयंत्र पर शहद को गंगाजल और साधारण जल के साथ मिलाकर अभिषेक भी किया जा सकता है।

यदि सामान्य रूप से पाठ करते हों तो प्रतिदिन अथवा मासिक पाठों की संख्या के १/१० भाग का होम करना चाहिए।

My dear readers! Very soon I am going to start free of Cost E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

For Purchasing all the books written By Shri Yogeshwaranand Ji Please Contact 9410030994

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi

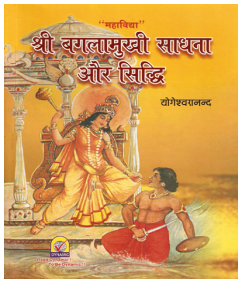

2. Mantra Sadhana

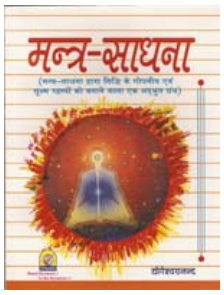

3. Sri Vidya Shodashi Mahavidya **(Tripursundari Sadhana)**